ये भी हिंसा है

[जन नाट्य मंच; 7 कलाकार; 25 मिनट; जून 2005]

पात्र विभाजन

1. औरत 1
2. औरत 2
3. ईर/मॉडल 1/पात्र 5
4. बीर/दूल्हा/पात्र 3
5. फत्ते/पात्र 4/छैला
6. सैल्समैन/पात्र 1
7. मॉडल 2/पात्र 2/क़िस्साकार

(दो महिला कलाकारों का प्रवेश)

औरत 1 : ये कहानी है औरतों पर होने वाली हिंसा की।

औरत 2 : हिंसा, जिसकी एक परंपरा है, जो सिर्फ़ जीवन में ही नहीं, हमारे क़िस्सों कहानियों में भी मौजूद है।

औरत 1 : हिंसा जिसे हर पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को इस तरह मनस देती है जैसे लाश से कफ़न उतारकर मनस दिया जाता है।

औरत 2 : एक पल को याद कीजिए सीता, अहल्या, रेणुका, द्रौपदी और सूर्पनखा जैसी औरतों को जो हिंसा का शिकार बनीं और हिंसा के लिए उन्हीं को ज़िम्मेदार ठहराया गया।

(स्टाइलाईज़्ड मुद्राओं के साथ दोनों महिला पात्र कविता को बोलती हैं।)

इन्द्र का पाप था
गौतम का श्राप था
शिला बनी अहल्या
वो भी तो एक हिंसा थी

दो संस्कृतियों का आपसी टकराव था
प्रणय निवेदन का जवाब था
सूर्पनखा की नाक कटी
वो भी तो एक हिंसा थी

हालांकि वो सीता थी
राम की परिणीता थी
हुई फिर भी अग्निपरीक्षा
वो भी तो एक हिंसा थी

पांच महाबलियों की थी नारी
भरी सभा में खींची गई साड़ी
जुए का दाव या फिर चीरहरण
वो भी तो एक हिंसा थी

जमदग्नि की पत्नी थी
परशुराम की माता
मन से वो औरत थी
पति के आदेश से, पुत्र के फरसे से
रेणुका की गर्दन कटी
वो भी तो एक हिंसा थी

(एक महिला पात्र का प्रस्थान। दूसरी महिला कमर में गमछ कर गाना गाने के लिए तैयार होती है। ईर, बीर, फत्ते–ये ती गाने के दौरान विभिन्न विरंचनाएं बनाते हैं।)

इक रहिन ईर
इक रहिन बीर
इक रहिन फत्ते
इक रहिन हम।

(ईर, बीर, फत्ते का प्रवेश।)

: देखो वो पचास लाख का पेमेंट कर दो। और सुनो ड्राइवर से कहना नई गाड़ी का ट्रायल मैं खुद लूंगा।

: मम्मी मैं स्कूल कैसे जाऊं? गाड़ी तो भईया ले गए हैं।

: देखो साहब, अगले मोड़ तक दस रुपए लगेंगे। चलना है तो चलो वरना और बहुत सी सवारियां हैं अपने पास।

इक रहिन ईर
इक रहिन बीर
इक रहिन फत्ते
इक रहिन हम।
ईर चलाए लंबी गाड़ी
बीर चलाए मोटर बाइक
फत्ते चलाए साइकिल रिक्शा
हमऊ उनके पीछे खिसका।

ईर पहुंचे माल रोड
बीर पहुंचे लिंक रोड
फत्ते पहुंचे लोधी रोड
हमऊ पहुंचे होड़म होड़।
ईर देखिन इक लड़की
बीर देखिन इक लड़की
फत्ते देखिन इक लड़की
हम देखा... गर्दन घूम गई। हा... हा... हा...।

इक रहिन ईर
इक रहिन बीर
इक रहिन फत्ते
इक रहिन हम।
ईर पहुंचे डाबड़ी मोड़
बीर पहुंचे तेखंड मोड़
फत्ते पहुंचे कड़कड़ी मोड़
हमऊ पहुंचे पीछे दौड़।
ईर देखिन इक आंटी
बीर देखिन इक आंटी
फत्ते देखिन इक आंटी
हम देखा... गर्दन घूम गई। हा... हा... हा...।

इक रहिन ईर
इक रहिन बीर
इक रहिन फत्ते
इक रहिन हम।
ईर पहुंचे सागरपुरा
बीर पहुंचे कर्मपुरा
फत्ते पहुंचे जंगपुरा
हमऊ चलके उनको घूरा।
ईर देखिन इक बच्ची
बीर देखिन इक बच्ची
फत्ते देखिन इक बच्ची
हम देखा, गर्दन घूम गई। हा... हा... हा...।

इक रहिन ईर
इक रहिन बीर
इक रहिन फत्ते
इक रहिन हम।

(तीनों का प्रस्थान। दूसरी महिला पात्र का प्रवेश। ये कविता दोनों महिला पात्र खेलती हैं—इस तरह कि मर्द बोल रहे हों। इसमें तन्ज़ ना हो। सिर्फ़ आख़िरी स्टैंज़ा गुस्से से कहा जाए।)

देखेंगे,
घूर कर देखेंगे
देखा ही तो है
छुआ तो नहीं
कोई रेप तो नहीं किया
ये कोई हिंसा तो नहीं

देखेंगे हर बच्ची को, जवान को, बूढ़ी को,
हर औरत को

स्कूल में, सड़क पर, बस में, बाज़ार में
कॉलिज अस्पताल में, घर में ऑफ़िस में
खेत में, फ़ैक्ट्री में, दुकान में
सिनेमा के पर्दे पर
अख़बारों की तस्वीर में
कैमरे के पीछे से, खेल के मैदान में
ऑपरेशन के टेबल पर
यहां तक की, मृत्यु शय्या पर भी
घूरेंगे उसे।
इस में हर्ज ही क्या है?
ये तो हमारा मौलिक अधिकार है
आख़िर एक आज़ाद देश के आज़ाद बाशिंदे हैं।
फिर ये तो स्वाभाविक है
नैसर्गिक है

कि नर मादा को देखे

ये तो प्रकृति का नियम है, कैमिस्ट्री है जी
इससे ही तो चलती है सृष्टि
औरत तो देखने की चीज़ है।

(औरत 2 का प्रस्थान। औरत 1 पलट कर लौटती है। गुस्से से कहती है।)

इसलिए देखेंगे हर औरत को
और आंखों से तार-तार कर देंगे उसके कपड़े
दाग़ देंगे उसके जिस्म को
क्योंकि देखा ही तो है
छुआ तो नहीं
रेप तो नहीं किया
देखना कोई हिंसा तो नहीं

(प्रस्थान। एक पात्र टोपी और टाई में आता है। मैरिज मॉल का दृश्य।)

सेल्समैन : आइए आइए आइए, जिस किसी मेहरबान को, क़दरदान को, सलमान ख़ान को, ज़रूरत है इक श्रीमती की, कलावती की, सेवा करे जो पति की, तो आइए मत शर्माइए, क्योंकि ये है द ग्रेट इंडियन वैडिंग मॉल।
बाज़ार खुला है, मॉल सजा है।

(दो पात्र मॉडल बनकर रैंप पर चलते हैं। एक मॉडल पाश्चात्य कपड़ों में है। दूसरा मॉडल लंबे घूंघट में है।)

नाटी लंबी गोरी काली
सीधी-साधी नखरे वाली
अमीर-ग़रीब मिडल क्लास
साधारण या ख़ासमख़ास।
स्कर्ट वाली, साड़ी वाली
बाहर वाली या घर वाली

(दोनों मॉडल का प्रस्थान। दूल्हे का प्रवेश।)

दूल्हा : एक्सक्यूज़ मी, मैं हूं, Mr. So and So.

सेल्समैन : समझते हैं ख़ुद को हीरो!
नाटा क़द लंबी नाक, पढ़ाई लिखाई...

दूल्हा : ठीक ठाक।

सेल्समैन : इनकम?

दूल्हा : फ़ाइव फ़िगर

सेल्समैन : छोटा दिल छोटा जिगर।
बीवी चाहते हैं ए-वन, ताकि बेकार न जाए आपका यौवन? इक अदद पत्नी की है तलाश, जो पूरी करे आपकी हर आस? राइट?

दूल्हा : राइट!

सेल्समैन : तो श्रीमान पेश करते हैं मॉडल नं. वन।

(पाश्चात्य लिबास में पात्र का प्रवेश।)

श्रीमान देखिए ये है हमारा लेटैस्ट मॉडल। इ
मिनी स्कर्ट देखिए। इसका thong देखिए।
लगा क्या? जवानी का मज़ा आ जाएगा।

(दूल्हा मॉडल के चारों ओर मंडराता है। सेल्समैन माल के अंदाज़ में बोलता है।)

इसकी चाल देखिए। इसके बाल देखिए,
oomph देखिए। है न इसका जिस्म voluptu
है न इसकी कमर लचकीली? है न इसके
inviting? हैं न इसकी आंखें नशीली? श
मत श्रीमान। ज़रा छूकर देखिए। महसूस की
She won't mind. She's a sport.

(हिचकिचाहट और लालच के साथ दूल्हा मॉडल के पास है। सेल्समैन और उकसाता है। दूल्हा मॉडल को छूता है। से चीख़ता, ग़श खाकर सेल्समैन की बांहों में गिरता।)

ज़रा तसव्वुर कीजिए-लंबी गाड़ी है, पांच
होटल, डीलक्स सूईट, मख़मल का गलीचा,
की चादर, आपकी बांहों में ये मदमस्त ह
उसके कपड़े एक-एक करके ज़मीन पर गि
.. कहिए पसंद आया ये मंज़र?

दूल्हा : देखने में तो बहुत बढ़िया है, लेकिन क्या
गृहस्थी संभाल पाएगी?
मेरे बच्चों की मां बन पाएगी? मेरी दादी की
कर पाएगी? मेरे परिवार की देखभाल करेगी
घर से बाहर निकलेगी तो लौंडे लपाड़े चम्चे
सीटियां बजाएंगे, गर्लफ्रैंड तो ठीक है मगर बी
नो नो नो।

सेल्समैन : *(मॉडल को)* Out you go! *(मॉडल का प्र*
ओ हो तो आपको पुराना मॉडल चाहिए,
विचारों के हैं आप। जाते कहां हैं श्रीमान,
लिए भी है अपने पास इंतज़ाम। मॉडल
(मॉडल का घूंघट में प्रवेश। स्वामी कह क
के क़दमों में गिरना) लीजिए पेश है नौ गज़ी
में लिपटी नार नवेली,
न कोई उलझन न पहेली।
न कोई सखा न सहेली,
सुबह से रात देर तक कर सकती है काम,
परिवार को देगी पूरा आराम।
मशीन से बेहतर धो सकती है कपड़े,

काई में बेहतर कर सकती है सफ़ाई।
रसोई में भी जादू दिखाएगी अन्नपूर्णा,
सर्वगुण संपन्न है संपूर्णा।
इसके साथ हैं फ़्री पांच पेटी और एक लंबी कार।
बोलिए है स्वीकार?

: (*सोचता है*) पांच पेटी से किसे होगा इंकार। और लंबी गाड़ी भी है स्वीकार। लेकिन दिखने में तो ये मेरी नौकरानी लगती है। क्या मैं इसे पार्टियों में ले जा पाऊंगा? After all, life में कुछ रोमांस भी होना चाहिए। काम करने के लिए तो ठीक है, लेकिन वाइफ़? नो नो नो नो।

: You go! (*मॉडल का प्रस्थान*) न आपको चाहिए चटकीली, न आपको चाहिए शर्मीली। आपको चाहिए रीमिक्स, राइट?

: राइट।

(... 2 का प्रवेश। दूल्हा और वो एक दूसरे को देखकर ... हैं।)

: तो पेश है औरत नंबर वन। मेरा दावा है इसे देखकर आपको घर-घर की कहानी याद आएगी। तुलसी सी ये आपके आंगन में खिलखिलाएगी। कुसुम सी ये महकेगी। प्रेरणा सी उतरेगी ज़िंदगी की कसौटी पर पूरी। जस्सी से होंगे इसके संस्कार, पूजा सी देगी अपनी लाइफ़ तुम पे वार। बोलिए है स्वीकार?

(... और औरत एक दूसरे के पास आते हैं, हाथ पकड़कर ... हैं। गाना शुरू, बाकी मर्द पात्र दायरे के किनारे खड़े होकर ... में शामिल होते हैं।)

ये है औरत नंबर वन, ये है औरत नंबर वन
पढ़ाई में नंबर वन, कमाई में नंबर वन
रसोई में नंबर वन, बुनाई में नंबर वन
कामकाज में नंबर वन, रूपरंग में नंबर वन
चालचलन में नंबर वन, सलीक़ा ढंग में नंबर वन
घर में नंबर वन, बाज़ार में नंबर वन
सैक्स में नंबर वन, संस्कार में नंबर वन
लव में नंबर वन, हेट में नंबर वन
चुप्पी में नंबर वन, डिबेट में नंबर वन
दबने में नंबर वन, डटने में नंबर वन
मर्द के इशारों पे मिटने में नंबर वन

... 1 : ये है बेटी नंबर वन
... 2 : ये है गर्लफ़्रैंड नंबर वन
... 3 : ये है बीवी नंबर वन
पात्र 4 : ये है मम्मी नंबर वन
पात्र 5 : ये है बहू नंबर वन
सब : ये है औरत नंबर वन, ये है औरत नंबर वन

(औरत बीच में खड़ी रहती है। एक-एक करके अभिनेता अपना संवाद बोलकर औरत को थप्पड़ मारते हैं और अपनी-अपनी जगह पर अभिनय दायरे की परिधि पर थम जाते हैं।)

पात्र 1 : जब देखो एम.टी.वी. देखूंगी, एम.टी.वी. देखूंगी। (*थप्पड़ मारता है।*)
पात्र 2 : दुपट्टा ओढ़कर क्यों नहीं आई? (*थप्पड़*)
पात्र 3 : मैं रात को कितने बजे भी घर आऊं, पूछने वाली तू कौन होती है? (*थप्पड़*)
पात्र 4 : मेरी जीन्ज़ क्यों प्रेस कर दी? (*थप्पड़*)
पात्र 5 : घर की बहू-बेटी ऊंची आवाज़ में बात नहीं करतीं। (*थप्पड़*)

(अगले संवाद पांचों अपनी जगह पर खड़े होकर कहते हैं।)

पात्र 1 : घर के काम में मां की मदद करने में हाथ टूट जाते हैं तेरे?
पात्र 2 : इतनी देर से इंतज़ार कर रहा हूं। कहां थी अब तक?
पात्र 3 : तेरे बाप से एक गाड़ी ही तो मांगी थी? वो अब तक क्यूं नहीं आई?
पात्र 4 : कॉलेज के लिए देर हो रही है, अब तक ऑमलेट क्यों नहीं बनाया।
पात्र 5 : तेरी मां ने तुझे रोटी बनानी नहीं सिखाई।

(पांचों अभिनेता एक साथ संवाद बोलते हुए औरत के पास आते हैं। रुकते हैं। चिल्लाकर एक साथ उस पर थप्पड़ का वार करते हैं, औरत गिरती है। थप्पड़ का हाथ फ़्रीज़ है।)

पात्र 1 : मैं तेरा बाप हूं।
पात्र 2 : मैं तेरा बॉयफ़्रैंड हूं।
पात्र 3 : मैं तेरा पति हूं।
पात्र 4 : मैं तेरा बेटा हूं।
पात्र 5 : मैं तेरा ससुर हूं।

(पांचों का तेज़ी से प्रस्थान। औरत बीच में। दूसरी औरत उसे उठाती है। दोनों कविता कहती हैं।)

एक आदर्श औरत की जानना चाहते हैं परिभाषा
आदर्श होती है वो
जो बर्दाश्त कर सकती है हर तमाचा।
पिता की कुंठा का तमाचा
मां की घुटन का तमाचा
भाई के गुस्से का तमाचा
महबूब की जलन का तमाचा
ससुर के लालच का तमाचा

पति के वहम का तमाचा
समाज की सीमा का तमाचा
मर्द के अहम् का तमाचा।
इन तमाचों को सह मस्तक धरेगी जो सहर्ष
वही औरत दुनिया में कहलाएगी आदर्श।

और अगर वो इन उठी हथेलियों को मरोड़ दे
अपने आक्रोश से समाज की सीमा को झंझोड़ दे
परंपरा की धार को मोड़ दे
अपनी चुप्पी तोड़ दे,

तो वो कहलाती है कुलच्छिनी, फ़ाहशा, बदमाश।
या फिर औरत?
औरत जो
करती है एक नए आदर्श की तलाश

(दोनों का प्रस्थान। किस्साकार का प्रवेश। किस्सा गाता है। गाने के दौरान लैला और छैला का प्रवेश और शब्दों के मुताबिक़ एक्शन करते हैं।)

एक थी लैला नटखट गोरी
छैल छबीली बांकी छोरी
लाल गुलाबी गाल थे उसके
नागिन जैसे बाल थे उसके
कोयल जैसी उसकी बोली
सखियों के संग करे ठिठोली
हिरनी जैसी उसकी चाल
पूरे शहर में मचा धमाल

उसके पड़ोस में था इक छैला
करता हरदम ''लैला लैला''
ऋतिक जैसा करता नाच
एक बराबर पूरे पांच
सलमान जैसे उसके डोले
बाल संवारे हौले हौले
लैला को करने इंप्रैस
रोज़ खाता मिंटो-फ्रेश
और गाता ''हे हे हे...''
फिर भी लैला डाले ना घास
पर न छोड़ी उसने आस
उसने अपनाए कई फ़ॉरमूले
तरह-तरह के पापड़ बेले
बालों में ब्रिलक्रीम लगाई
जिलेट से उसने शेव बनाई
और लगाया एक्स-इफ़ेक्ट,
किया मामला फ़ुल परफ़ेक्ट
रूपा की पहनी बनियान
जेन-एक्स की अब देखो शान
क्वालिटी-वाल्स का कोन खाया
पेप्सी का एक घूंट लगाया
बाइक चलाके डेफ़िनेटली मेल
पहुंचा पूरा करने खेल...

(छैला मोटर साइकिल चलाता है, लैला को बस स्टाप पे देख रुकता है। गाता है)

छैला : ओ बबली ए बबली Be my lover bubbly.. *(गायक पात्र से पूछता है)* माचिस है? *(मा लेकर वापस नहीं करता)* ए बबली चल घर बबली। आई लव यू बबली। *(लैला उससे भागती है। छैला उसके पास जाता हाथ पकड़ लैला झिटक देती है।)* अंकल टाइम क्या है?

एक पात्र : सात बज गए बेटा।

छैला : बस? अरे अभी तो बहुत टाइम है। ए बबली ना मेरे घर। निशा भी कह रही थी तुझे बहुत से नहीं देखा। चल।

लैला : मुझे तुममें कोई interest नहीं है।

छैला : बबली मैं तुझे घर छोड़ दूंगा यार। बेकार में श रही है। *(अचानक मुड़कर देखता है। एक खड़ा है। छैला आक्रामक अंदाज़ से उसकी जाता है। लैला का दुपट्टा हाथ में लेकर, ताकि भाग न जाए। आदमी का गिरेबान पकड़कर धमकाता है।)*

छैला : ए ए लड़की को देखता है! चल भाग यहां

(आदमी का प्रस्थान। छैला लैला का दुपट्टा खींचकर फुसलाता है।)

आई लव यू बबली।... *(वग़ैरा)*

(लैला अपने को छुड़ाने की कोशिश करती है। छैला धीरे- फुसलाने से और हिंसक होता है। लैला भागती है। एक पात्र द बनकर रोकता है। छैला आता है। लैला फिर भागती है। द छैला फिर आता है। लैला भागती है, छैला हर बार की तरह अ पूरा पंजा फैलाकर उसकी ओर आता है। अंत में लैला का पकड़कर उसे गिराता है। बलात्कार का दृश्य। छैला किनारे है।)

छैला : ये प्यास है बड़ी। *(प्रस्थान। लैला बीच में पड़ी है। एक-एक करके पात्र खड़े ह

अपना-अपना संवाद बोलते हैं।)

(...न्य)

...1 : देखो जी भाई साहब पुलिस तो आपके साथ है। आप कहते हो तो रपट लिख लेते हैं। कहते हो तो नहीं लिखते। हमारी मानो तो रहने ही दो। भई लड़की का मामला है, आगे इसकी शादी ब्याह की बात भी तो करनी है। बाकी आपकी मर्ज़ी। Delhi Police is with you, for you, always...

(...न्त)

...2 : बहुत अच्छी लड़की थी। पढ़ने में होशियार थी। कॉलेज की सारी एक्टीविटीज़ में हिस्सा लेती थी। सबकी मदद करती थी। हां, उस लड़के की बहन उसकी दोस्त ज़रूर थी। आगे क्या हुआ पता नहीं. -

(...)

...त 2 : पैदा होते ही मर क्यों नहीं गई कमबख़्त। नाक कटवा दी हमारी। पुलिस में जाने की क्या ज़रूरत थी?

(...ड़ौसी)

...3 : ये तो सब फ़िल्मों का असर है। इतना सैक्स, इतनी वायलेंस दिखाते हैं। ये नहीं होगा तो और क्या होगा?

(...पुन)

...5 : The case has been registered. The police has started investigating. Evidences will be examined, then justice. It may take five years, ten years who knows?

(...डिया)

...4 : एक पढ़ी लिखी मॉडर्न लड़की के साथ, दिन दहाड़े बलात्कार। हमारा चैनल इसका अपडेट आपको देता रहेगा। Stay with us.

(...के हर संवाद का अंत अगले के शुरूआत के संवाद के साथ ...lap होता है।)

(...क्टर)

...1 : रेप का केस साबित करना इतना आसान नहीं होता। लड़की के गुप्तांगों पे चोट के निशान नहीं पाए गए हैं। हाँ उसके पैंटीज़ में सीमेन के धब्बे हैं, लेकिन इससे कुछ साबित नहीं होता।...

(...)

...2 : एक बार कह दिया कि लड़की घर से बाहर नहीं जाएगी तो नहीं जाएगी। हमने देखा है लड़कियों के बाहर निकलने पर क्या हश्र होता है। बस लड़की बाहर नहीं जाएगी।...

(मां)

औरत 2 : हम भी चाहते हैं हमारी बेटी पढ़े लिखे, कैरियर बनाए, लेकिन क्या करें शहर का हाल ही ऐसा है कि... बेटी की सुरक्षा का भी सोचना होगा... मैंने तो कह दिया दिनभर पढ़ो, लिखो, घूमो, बस शाम होते-होते घर आ जाओ।

(टीचर)

पात्र 3 : मैं कहता हूं स्कूल कॉलेज में नैतिक शिक्षा होनी चाहिए। छात्र-छात्राओं को धर्म पढ़ाओ। वेद पुराणों की शिक्षा दो।

(पड़ौसी)

पात्र 4 : जो होना था वो तो हो चुका। अब अगर वो लड़का अपनी ग़लती मानने को तैयार है, और वो लड़की से शादी करना चाहता है, तो कर दो शादी।

(वकील)

पात्र 5 : No, no, mi lord. This is a baseless charge against my client. The medical report clearly says that rape cannot be conclusively proved.

(सभी पात्र एक साथ बोलने लगते हैं। अचानक आवाज़ ग़ायब हो जाती है। सिर्फ़ बोलने का अभिनय होता है। नीचे पड़ी लैला उठती है। सब पात्र फ़्रीज़ होते हैं। औरत 2 दर्शकों को संबोधित करती है।)

औरत 2 : दरिंदों के इस शहर में जब किसी औरत पर हिंसा होती है, तो हम उस औरत को ही दोषी ठहराते हैं, और गुनहगार साफ़ बच निकलता है।

(फ़्रीज़ हुए पात्रों का प्रस्थान)

औरत 1 : अगली बार अगर इस तरह की घटना किसी लड़की के साथ होती है तो उसे नहीं चाहिए आप लोगों का तरस, आपकी हँसी, आपकी दया। उसे चाहिए केवल इंसाफ़, बराबर का व्यवहार, सर उठाकर जीने का अधिकार।

(प्रस्थान)

औरत 2 : आपके मुहल्ले में, गली में, दफ़्तर में, सड़क पर, कहीं पर अगर किसी औरत पर हिंसा होती है, तो चुप न रहिए, उसे रोकिए।

■